डिसलेक्सिया पर नई रोशनी

जिन लोगों ने 'तारे ज़मीन पर' फिल्म देखी है वे डिसलेक्सिया से परिचित होंगे। कुछ बच्चों को पढ़ने में दिक्कत होती है। ऐसा बताते हैं कि ऐसे बच्चों को अक्षर कागज़ पर नाचते दिखाई देते हैं या एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं। कई बार वे दोनों आंखों से मिलने वाली सूचना को एक साथ मिलकर नहीं देख पाते। परिणाम यह होता है उन्हें कोई भी इबारत पढ़ने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

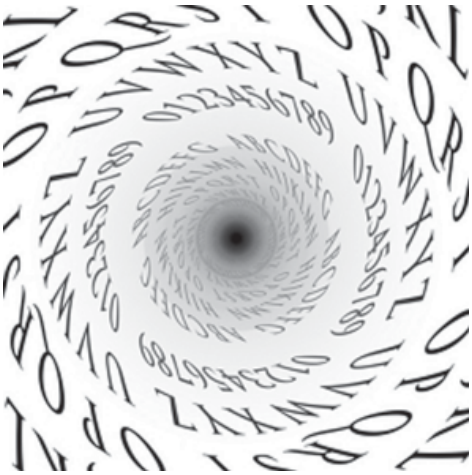

आम मान्यता यह है कि डिसलेक्सिया की समस्या आंखों के किसी विकार की वजह से होती है। जैसे बताया जाता है कि सफेद कागज़ पर लिखे अक्षर पढ़ने में इन बच्चों को ज़्यादा परेशानी होती है। इसलिए आजकल ऐसे उत्पाद मिलने लगे हैं जो कागज़ का रंग बदलकर दिखाते हैं। जैसे रंगीन चश्मा या पढ़ते समय कागज़ पर रखने के लिए रंगीन शीशा वगैरह।

मगर हाल में किए गए एक अध्ययन ने इस मान्यता पर सवाल खड़े कर दिए हैं कि डिसलेक्सिया दृष्टि से सम्बंधित दिक्कत है। इस अध्ययन में यूके के सात से नौ वर्ष उम्र के करीब 6000 बच्चों का परीक्षण किया गया। परीक्षण दो प्रकार का था - पढ़ने की क्षमता का परीक्षण और कई सारे दृष्टि सम्बंधी कार्य करने का परीक्षण।

इनमें से लगभग 3 प्रतिशत बच्चों को गंभीर डिसलेक्सिया था। यह यूके के राष्ट्रीय औसत के लगभग बराबर ही था। अध्ययन में देखा गया कि दृष्टि सम्बंधी परीक्षण के परिणामों पर इस बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि किसी बच्चे को डिसलेक्सिया की समस्या है या नहीं। कुल 11 परीक्षणों में डिसलेक्सिया वाले 16 प्रतिशत बच्चों का प्रदर्शन कमज़ोर रहा जबकि पढ़ने की सामान्य क्षमता वाले 10 प्रतिशत बच्चों का परीक्षण कमज़ोर पाया गया। दल के सदस्य एलेक्ज़ेंड्रा क्रीविन (ब्रिस्टल विश्वविद्यालय) का कहना है कि इस अंतर का एक कारण यह हो सकता है कि डिसलेक्सिया की समस्या से पीड़ित बच्चे कम पढ़ते हैं। वैसे भी 16 प्रतिशत के आंकड़े से डिसलेक्सिया की पूरी समस्या की व्याख्या नहीं हो सकती।

सवाल यह है कि फिर डिसलेक्सिया होता क्यों है। इस बात को समझने के लिए कई विचार प्रस्तुत हुए हैं कि क्यों कुछ सामान्य या सामान्य से अधिक बुद्धिमान बच्चों को पढ़ने में दिक्कत होती है। मगर इनमें से किसी भी विचार के आधार पर पूरी व्याख्या नहीं हो पाती। इसलिए बेहतर होगा कि हम यह मान लें कि डिसलेक्सिया पढ़ने में एक दिक्कत है जिसका कारण हम नहीं जानते। यह भी स्वीकार करना होगा कि पढ़ने में दिक्कत का सम्बंध बुद्धि से नहीं है।

इस अध्ययन से दो स्पष्ट निष्कर्ष निकलते हैं। एक तो डिसलेक्सिया के लिए जो तमाम उत्पाद बेचे जा रहे हैं, वे फालतू हैं और पैसों की बरबादी हैं। दूसरा कि संभवतः इन बच्चों को पढ़ने में मदद उन्हीं तरीकों से मिलेगी जो सामान्य बच्चों के लिए उपयोगी है, शायद समय ज़्यादा लगेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***